नवम्बर २०१४

कीमत १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

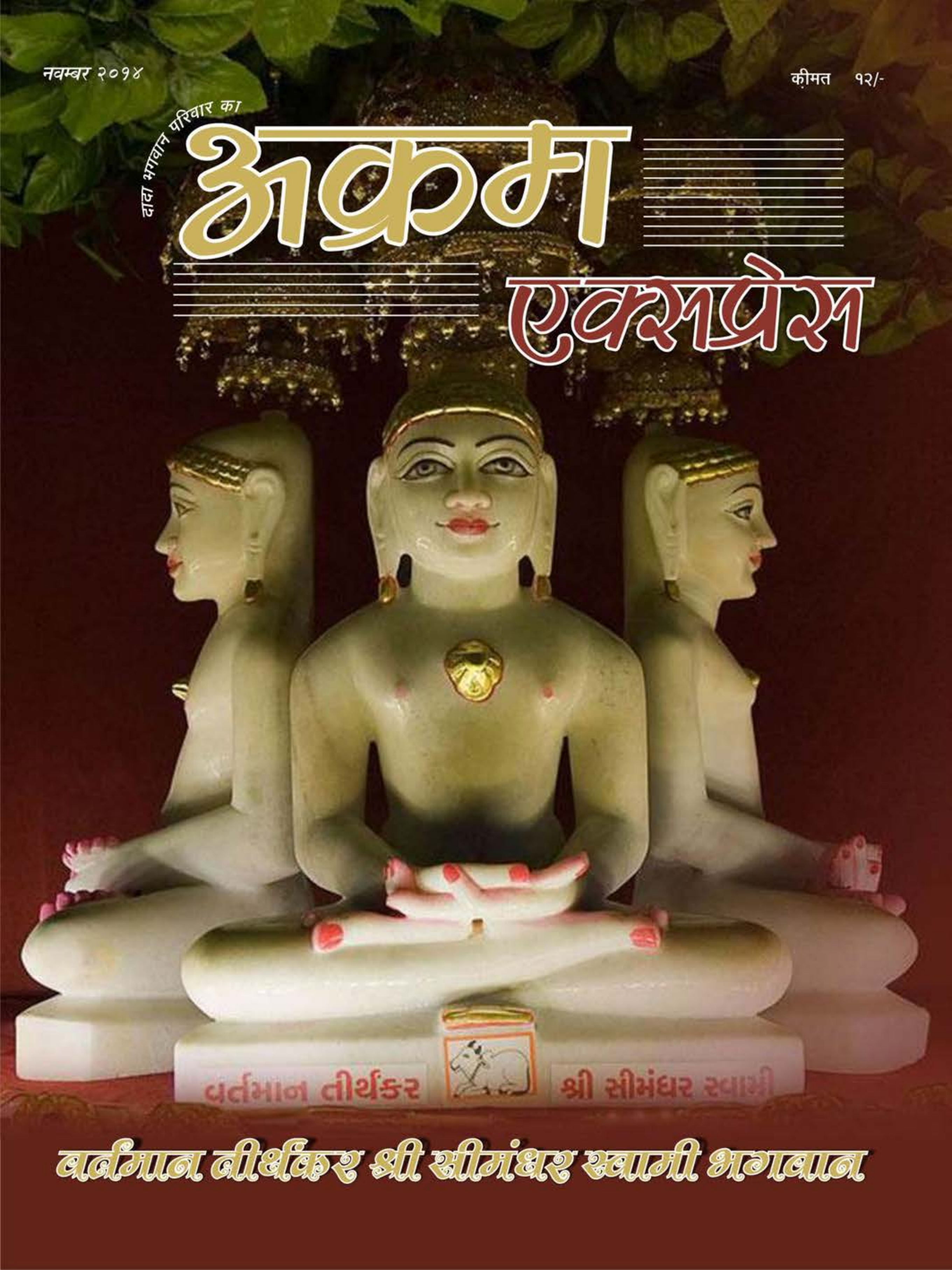

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी भगवान

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी भगवान

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: ८
अखंड क्रमांक: २०
नवम्बर २०१४

....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

....

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

....

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

श्री सीमंधर स्वामी भगवान का नाम सुनते ही आपको लगता होगा कि ये तो जैनों के भगवान हैं। लेकिन नहीं, वे जैनों के भी भगवान नहीं हैं नहीं वैष्णवों के । वे तो वीतराग भगवान हैं। वीतराग भगवान तभी कहलाते हैं जब उन्हें सभी धर्मों के लिए पक्षपात चला जाता है।

तो आओ, इस अंक में हम श्री सीमंधर स्वामी के बारे में बहुत कुछ जान लें और उनकी भक्ति-आराधना में जुड़ जाए।

-डिम्पल मेहता

सीमंधर स्वामी भगवान का परिचय

नामः श्री सीमंधर स्वामी
पिता श्री : राजा श्रेयांस
माता श्री : सात्यकीदेवी
क्षेत्र : महाविदेह क्षेत्र। यह हमारी पृथ्वी से ईशान दिशा में लाखों मील दूर हैं।
ऊँचाई : १५०० फूट (५०० धनुष्य)
लाँछन : वृषभ
जन्मकाल : सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ और अठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ के बीच के समय में भगवान श्री सीमंधर स्वामी का जन्म हुआ था।
धर्म पत्नी : राजकुमारी रुकमणीदेवी
दीक्षा काल और केवलज्ञान : जब भगवान राम के पिता दशरथ राजा का राज्य हमारी पृथ्वी पर था तभी भगवान सीमंधर स्वामी ने दीक्षा ली थी। हज़ारों सालों तक वे साधु रहे। उस दौरान उन्होंने ज्ञान पर आवरण लानेवाले कर्मों का क्षय किया, चैत्र सुदी तेरस के दिन भगवान सर्वज्ञ हुए और केवलज्ञान प्राप्त किया।
शासनदेव : चान्द्रायण यक्षदेव
शासनदेवी : पाँचांगुली यक्षिणीदेवी
स्वामी का परिवार : जगत् कल्याण के लिए भगवान के चरणों में समर्पित ऐसे चौंसठ गणधर, दस लाख केवली, सौ करोड़ साधु-साध्वी एवं नौ सौ करोड़ श्रावक-श्राविकाएँ हैं।
आयुष्य काल : सीमंधर स्वामी का आयुष्य अभी पौने दो लाख साल का है और वे अभी सवा लाख साल और जीनेवाले हैं।
निर्वाण कालः आनेवाली चौबीसी के आठवें तीर्थंकर श्री उदयस्वामी के निर्वाण के बाद और नौवें तीर्थंकर श्री पेढाणस्वामी के जन्म से पहले श्री सीमंधरस्वामी और अन्य उन्नीस तीर्थंकर श्रावण सुदी तीज के अलौकिक दिन आयुष्य पूर्ण करके निर्वाण प्राप्त करेंगे।

सीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर भगवान कहलाते हैं। नवकार मंत्र में 'नमो अरिहंताणं' जो बोलते हैं, वे अरिहंत यानी ऐसे तीर्थंकर भगवान जो यहाँ देहधारी रूप में, केवलज्ञानी होते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ रूपी दुश्मनों का जिन्होंने नाश कर दिया हैं ऐसे केवलज्ञानी को अरिहंत कहते हैं। पहले जो चौबीस तीर्थंकर हो गए, उन सभी का मोक्ष हो गया, इसलिए वे सिद्ध भगवान कहलाते हैं। वे "नमो सिद्धाणं" में आते हैं। भूतकाल के तीर्थंकरों को याद करने से पुण्य बंधता है और वर्तमान तीर्थंकर को याद करने से मोक्ष मिलता है। इसलिए सीमंधर स्वामी को भजना चाहिए।

तीर्थंकर भगवान यानी क्या?

तीर्थंकर जहाँ विचरते हैं वहाँ तीर्थ हो जाता है। जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़ते हैं, वह जगह तीर्थ भूमि बन जाती है। इसलिए लोग इतिहास में लिखकर रखते हैं कि भगवान कहाँ-कहाँ विचरे थे और फिर वहाँ तीर्थ भूमि बन जाती है। इसलिए वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

वास्तव में गुणों से तीर्थंकर यानी क्या? उन्होंने दो जन्म पहले भावना की होती है कि इस जगत् का किस तरह से कल्याण हो, किस तरह जगत् में सब सुखी हो, मैंने जो ज्ञान प्राप्त किया है, जो सुख प्राप्त किया है वह सुख जगत् के लोगों को किस तरह से प्राप्त हो! ऐसी भावनाएँ की होती हैं। उसी के फलस्वरूप वे जो बोलते हैं वह देशना होती है। वे ऐसी वाणी बोलते हैं जो कि द्राक्ष जैसी मीठी होती है! जिसे सुनते ही मनुष्य में बदलाव आ जाता है!

तीर्थंकर यानी जिन्हें देखने से ही कल्याण हो जाता है!

सीमंधर स्वामी प्रभु कैसे हैं?

सीमंधर स्वामी की उम्र अभी पौने दो लाख साल की हैं। उनकी हाइट बहुत ऊँची (५०० धनुष्य जितनी) होती हैं। उनका शरीर हमारी तरह ही होता है। जैसे ऋषभदेव भगवान पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहलाते हैं वैसे ही सीमंधर स्वामी भी पूरे ब्रह्मांड के स्वामी कहलाते हैं। ढ़ाई हज़ार सालों से, हमारे यहाँ तीर्थंकरों का जन्म होना बंद हो गया है लेकिन वहाँ महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर हमेशा जन्म लेते रहते हैं। अभी सीमंधर स्वामी वहाँ उपस्थित हैं। हम उन्हें देख नहीं सकते लेकिन वे पूरी दुनिया को देख सकते हैं।

भगवान के शरीर से जो परमाणु निकलते हैं, उसकी वजह से उनके पास बैठनेवाले लोगों को भीतर से सुगंध का एहसास साधारण तौर पर होता रहता है।

तीर्थंकर भगवान का चरम(अंतिम) शरीर होता है, उनका रूप लावण्य ग़ज़ब का होता है, वर्ल्ड में आश्चर्य कहलाता है। उनके लावण्य की तो बात ही क्या? वर्णन ही नहीं किया जा सकता!

भगवान क्या करते हैं?

उन्हें कुछ करना ही नहीं होता है! उनके खुद के उदय कर्म जो करवाते हैं वही करते रहते हैं। वह खुद पूरे दिन ज्ञान में ही रहते हैं। उनके बहुत सारे फोलोअर्स (अनुयायी) होते हैं! वे दर्शन करते हैं और भगवान वीतराग भाव से देशना देते हैं।

सीमंधर स्वामी के दर्शन क्यों करने चाहिए?

सीमंधर स्वामी अभी हाज़िर हैं। ऐसे प्रत्यक्ष भगवान के दर्शन करने से कल्याण हो जाता है। वे प्रत्यक्ष हैं इसलिए कल्याण हो जाता है। वर्तमान तीर्थंकर के परमाणु सभी जगह उपस्थित रहते हैं। वर्तमान तीर्थंकर से बहुत लाभ होता है।

हमारी दुनिया (भरत क्षेत्र) में पिछले पच्चीस सौ साल से तीर्थंकरों का जन्म होना बंद हो गया है। वर्तमान के सभी तीर्थंकरों में सीमंधर स्वामी हमारी दुनिया से काफी नज़दीक हैं और हमारी दुनिया के लोगों के उद्धार के लिए उपकारी हैं। उनकी भक्ति करने से हमारा अगला जन्म वहाँ होगा और उनके दर्शन करने से हमारा मोक्ष हो जाता है।

सीमंधर स्वामी की आरती में सभी देवता उपस्थित रहते हैं। आरती सीमंधर स्वामी को सीधी पहुँचती है। उनकी आरती चाहे किसी भी मंदिर में गाओ वहाँ भगवान को हाज़िर होना ही पड़ता है।

भगवान के दर्शन किस तरह करने चाहिए?

"प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी से, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते हुए तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।"

"प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी से" ऐसा वाक्य प्रयोग इसलिए किया गया है कि जब तक हमारा श्री सीमंधर स्वामी के साथ सीधा तार नहीं जुड़ा है, तब तक जिनका तार उनके साथ निरंतर जुड़ा हुआ है, ऐसे ज्ञानीपुरुष श्री दादा भगवान के माध्यम से हमारा नमस्कार हम श्री सीमंधर स्वामी तक पहुँचाते हैं। जिसका फल हमें प्रत्यक्ष किए गए नमस्कार जितना ही मिलता है।

उदाहरण के तौर पर यदि हमें कोई संदेशा अमरिका पहुँचाना हो, उसे हम खुद नहीं पहुँचा सकते हैं इसलिए यह संदेशा पोस्ट ऑफिस को सौंपकर निश्चिंत हो जाते हैं। यह जिम्मेदारी पोस्ट ऑफिस की है और वह उसे पूरी करता है। उसी तरह पूज्य दादाश्री, श्री सीमंधर स्वामी को हमारा संदेशा पहुँचाने की जिम्मेदारी अपने सिर पर ली हुई हैं।

सुबह साढ़े चार से साढ़े छः का समय ब्रह्ममुहूर्त कहलाता है, सबसे ऊँचा मुहूर्त। उस दौरान "प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी से, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते हुए तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ" बोले कि तुरंत श्री सीमंधर स्वामी को पहुँच जाता है। उस समय वहाँ कोई भीड़ नहीं होती। इसलिए साढ़े चार से साढ़े छः बजे का समय अपूर्व काल कहलाता है! जिनकी युवा अवस्था हो, उन्हें यह छोड़ना ही नहीं चाहिए।

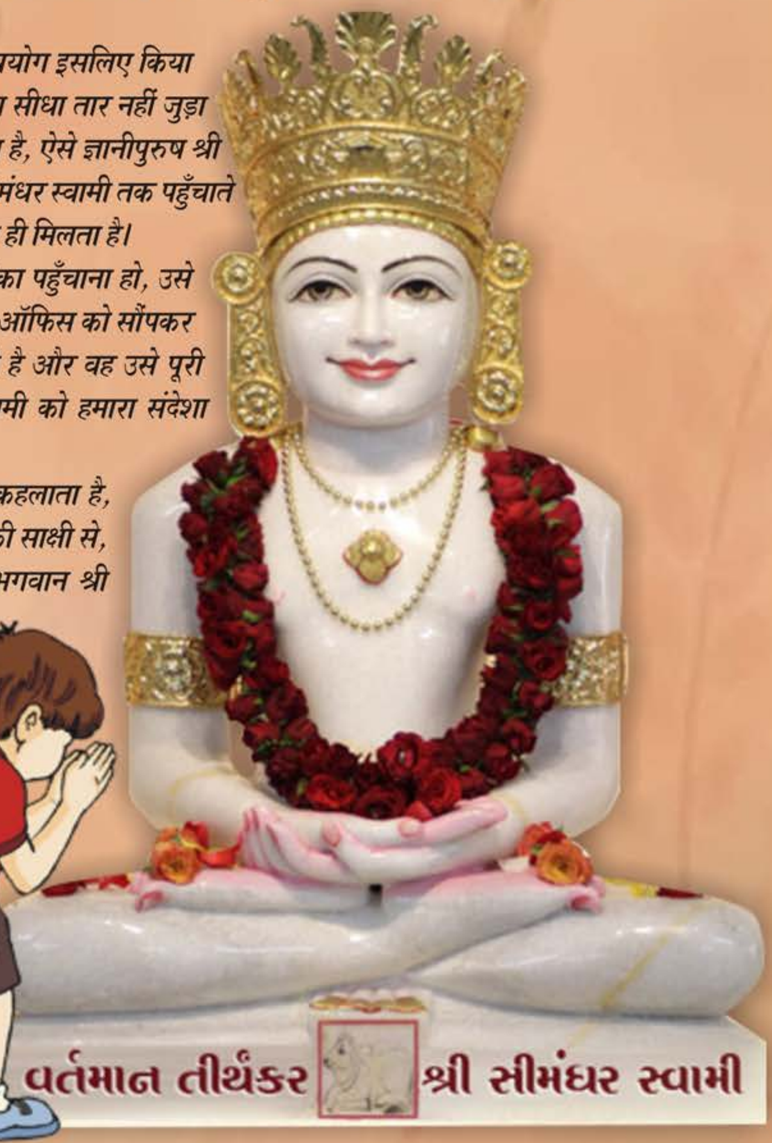

ज्ञानी कहते हैं....

प्रश्नकता : सीमंधर स्वामी की भक्ति घर में करें और मंदिर में करें उससे कुछ फर्क पड़ता है?

दादाश्री : फर्क पड़ता है क्योंकि मंदिर में भगवान की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई होती है और वहाँ सभी देवों का बहुत रक्षण भी होता है! मंदिर का वातावरण ऐसा होता है, इसलिए ज्यादा असर होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे ये मूर्तिपूजा अच्छी नहीं लगती। वह नोन लिविंग निर्जीव चीज़ है। उससे अच्छा तो हमें मनुष्य की मदद करनी चाहिए। जिन्हें ज़िंदगी में प्रोब्लम हो ऐसे लोगों की हेल्प करनी चाहिए। इस मूर्ति के पीछे हम घंटों बर्बाद करते हैं, हवन आदि करते हैं, यह सब करने की क्या ज़रूरत है?

दीपकभाई : उसका कारण है। यह मूर्ति किसकी है? सीमंधर स्वामी की, जो कहीं पर लाइव(जीवित) हैं, केवलज्ञान स्वरूप से। इसलिए हम यदि उन्हें याद करे तो हमें आनंद होता है।

जैसे तुम्हारी मम्मी का फोटो हो और मैं कहूँ कि यह तो कागज़ हैं, नोन लिविंग चीज़ है, तुम क्यों बार-बार उसे देखते रहते हो? लेकिन तुम्हें उस फोटो को देखकर आनंद होता है न? खुशी होती है या नहीं होती? तो वह कागज़ है या मम्मी हैं? यदि मैं कहूँ कि इसे फाड़ दो! तो तुम कहोगे कि नहीं फाड़ूँगा, मेरी मम्मी है। कहोगे या नहीं कहोगे? वह मूर्ति है कि क्या है? मूर्ति ही हैं लेकिन हमें याद दिलाती है न?

हमारे दादा-दादी अभी उपस्थित नहीं हैं, फिर भी हम उनका फोटो देखकर आनंद में रह सकते हैं न! अथवा तो पोज़िटिव देख सकते हैं कि इन लोगों ने ज़िंदगी में मुझे कितनी मदद की थी, तो ये भगवान भी कहीं हैं उन्हें याद करें तो उन्हें सीधा पहुँचता है। उनके पास क्या है? ज्ञान है, आनंद है। उनके दर्शन करने से हमें भी ज्ञान और आनंद उत्पन्न होता है।

मूर्ति की पूजा करे तो भौतिक सुख मिलते हैं क्योंकि हम श्रद्धा से पूजा करते हैं। मूर्ति में हमें श्रद्धा हैं इसलिए हमारी श्रद्धा हमें फल देती हैं। और भगवान को देखने से निर्विकारी होते हैं, वीतराग बनते हैं। दर्शन करने से ही भक्ति उत्पन्न होती है इसलिए हमें भक्ति करनी चाहिए।

सीमंधर स्वामी भगवान का भरत क्षेत्र के साथ क्या संबंध है?

सीमंधर स्वामी का हिन्दुस्तान के साथ ऋणानुबंध है, उनका भाव है और वे बहुत समय तक रहनेवाले हैं!

सीमंधर स्वामी तो भरत क्षेत्र में आठारहवें तीर्थंकर थे तभी से उपस्थित हैं, सभी तीर्थंकरों ने अनुमोदना की थी! तो इस अनुमोदन के रूप में उनकी कृपा उतर ही रही है। इसलिए जैसे यहाँ का सारा काम उन्हीं का हो इस तरह चल रहा है। यह ऋणानुबंध का हिसाब ही होगा। पहले का होगा न, वह हमेशा पूरा होता है।

महाविदेह क्षेत्र कहाँ है? कैसा है?

हमारी पृथ्वी से ईशान दिशा की ओर लाखों मील दूरी पर महाविदेह क्षेत्र स्थापित है। महाविदेह क्षेत्र के कुल ३२ विभागों में से आँठवें विभाग में पुष्पकलावती की राजधानी पुंडरिकगिरी में सीमंधर स्वामी हैं।

महाविदेह क्षेत्र इस ब्रह्मांड में ही है, लेकिन उस तरफ आगे बढ़ने पर बीच में ऐसे ठंडे (ज़ोन) है कि वहाँ से प्लेन नहीं जा सकता, कोई भी वहाँ नहीं जा सकता। इसलिए वे सभी क्षेत्र अलग हो गए हैं।

महाविदेह क्षेत्र में हमेशा ही तीर्थंकर भगवान जन्म लेते ही रहते हैं और हमारे क्षेत्र में कुछ समय के लिए ही तीर्थंकर जन्म लेते हैं, फिर नहीं रहते। अभी इस समय सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में हैं।

महाविदेह क्षेत्र में मूलतः संस्कृत भाषा होनी चाहिए, लेकिन हम किसी भी भाषा में उनसे प्रार्थना करें तो भी उन तक पहुँच ही जाती हैं क्योंकि इस नाम के प्रति भाव है न! और हमारे पास नाम तो निश्चित है ही!

वहाँ पर बहुत लंबा आयुष्य होता है लेकिन मनुष्य हमारे जैसे देहधारी ही हैं। वहाँ भी मनुष्यों की सभी भावनाएँ हमारी तरह ही हैं। हमारे जैसा ही व्यवहार है। लेकिन हमारे यहाँ चौथे आरे में जैसा व्यवहार था वैसा ही वहाँ है।

चौथे और पाँचवे आरे में क्या फर्क है? चौथे आरे में मन-वचन-काया की एकता होती है और पाँचवें आरे में यह एकता टूट जाती है। यानी मन में जैसा होता है वैसा वाणी में नहीं बोलते और वाणी में जो बोलते हैं वैसा व्यवहार में नहीं होता, उसका नाम पाँचवा आरा। और चौथे आरे में तो जैसा मन में होता है वैसा ही व्यवहार वाणी में बोलते हैं और वैसा ही करते हैं।

देवी-देवताओं की भक्ति क्यों करनी चाहिए?

इन शासन देवी-देवताओं को इसलिए खुश रखना चाहिए क्योंकि इस काल के मनुष्य पूर्वविराधक हैं। पूर्वविराधक यानी किसी को दुख देकर, परेशान करके आए हैं।

हमें देवी-देवताओं की आराधना इसलिए करनी चाहिए कि हमारा उनकी तरफ से कोई "क्लेम" (दावा) न रहे, हमारे मार्ग के बीच में वे अंतराय (रुकावट) नहीं डालें और हमें आगे बढ़ने दें और "हेल्प" करें।

हमारा किसी गाँव के साथ पहले कभी झगड़ा हुआ हो और हम यदि उस गाँव के लोगों के साथ आराधना का (अच्छा) भाव रखें तो झगड़ा मिट जाता है और बिगड़ा हुआ काम अच्छा होता है। उसी तरह, पूरी दुनिया की आराधना करने से, शासन देव-देवी ही नहीं, बल्कि जीवमात्र के साथ अच्छा हो जाता है।

शासन देव-देवियाँ निरंतर शासन के ऊपर या धर्म के ऊपर कुछ भी परेशानी आती है तो मदद करते हैं!

हम महाविदेह क्षेत्र में किस तरह जा सकते हैं?

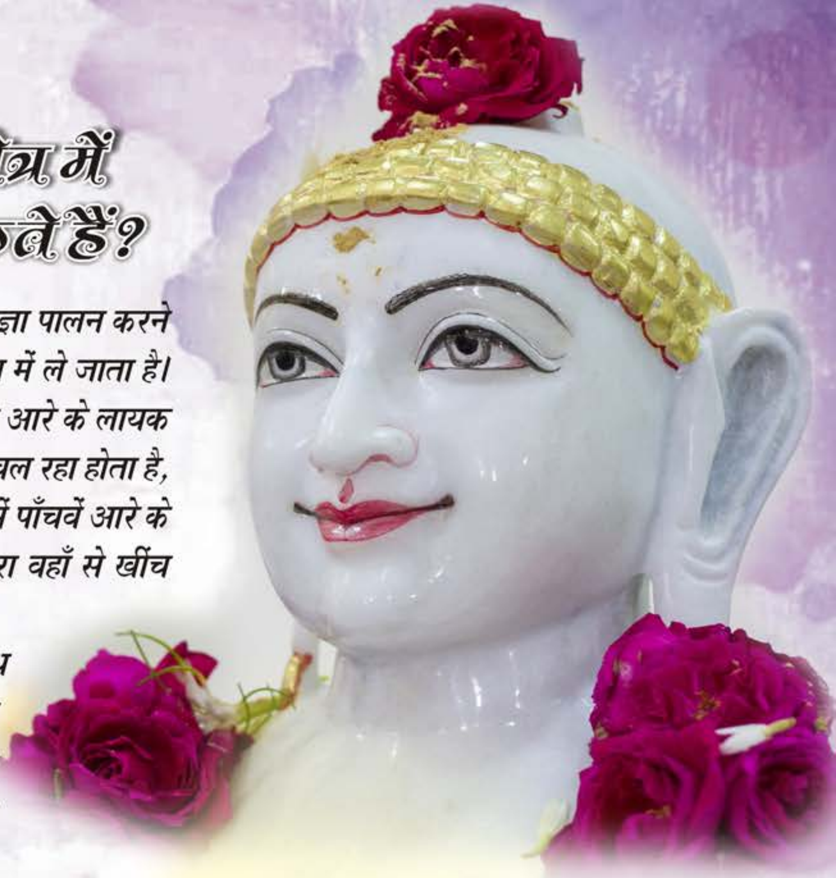

इस जन्म में दादा भगवान की पाँच आज्ञा पालन करने से जो पुण्य बंध रहा है, वही महाविदेह क्षेत्र में ले जाता है। ऐसा कुदरती नियम ही हैं कि जिसका चौथे आरे के लायक स्वभाव हो जाता है, उसे जहाँ चौथा आरा चल रहा होता है, वह क्षेत्र उसे खींच लेता है और चौथे आरे में पाँचवें आरे के लायक जो जीव होते हैं, उन्हें पाँचवाँ आरा वहाँ से खींच लेता है।

दादा का सीमंधर स्वामी के साथ संबंध हैं। दादा ने सभी महात्माओं के मोक्ष की जिम्मेदारी ली है। जो महात्मा दादा की आज्ञा का पालन करेंगे उनके मोक्ष की जिम्मेदारी दादा ने ली हुई हैं।

महाविदेह क्षेत्र में हम सीमंधर स्वामी के पास बैठे और उनके दर्शन हो इससे ही मोक्ष हो जाता है।

ज्ञानी वहाँ जा सकते हैं?

ज्ञानी जा सकते हैं, लेकिन देह से नहीं। ज्ञानीपुरुष के कंधे से एक लाइटवाला प्रकाश निकलता है और जहाँ तीर्थंकर होते हैं, वहाँ जाकर प्रश्नों का समाधान लेकर वापस आ जाता है। वह अलग प्रकार की बोड़ी है, वह बोड़ी प्रकाश रूपी है! वह निकलती है और समाधान लेकर वापस आ जाती है! बाकी वह खुद नहीं जा सकते।

दादा का सीमंधर स्वामी के साथ तार जुड़ा हुआ था। इसलिए दादाजी, सीमंधर स्वामी से कुछ प्रश्नों के जवाब प्राप्त कर सकते थे।

देवी-देवताओं की भक्ति क्यों करनी चाहिए?

यह तो नई ही बात!

तीर्थंकर भगवान के जन्म के बाद इन्द्रदेव और अन्य देव भगवान का जन्मोत्सव उत्साहपूर्वक मनाने के लिए उन्हें मेरू पर्वत पर ले जाते हैं। ढोल, नगाड़े, वाध्ययंत्रों और देव दुन्दुभी के साथ सभी देवता नृत्य करते हैं और इन्द्रदेव भी बाल स्वरूप भगवान को अपनी गोद में लेकर उन्हें दूध से नहलाते हैं।

तीर्थंकरों के विशिष्ट प्रकार के चौंतीस अतिशय (खूबी) होते हैं। जिससे वे सभी मनुष्यों से अलग दिखते हैं।

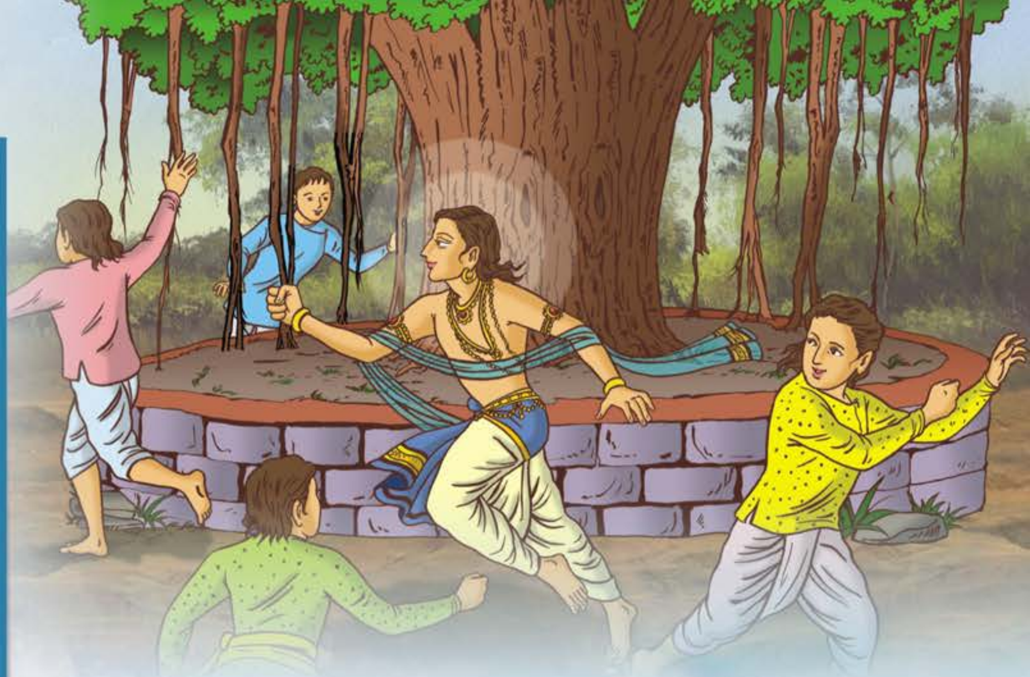

तीर्थंकर भगवान जब छोटे होते हैं तब उन्हें खराब संगत से बचाने के लिए, देव बाल स्वरूप धारण करके उनके साथ खेलते हैं। भगवान चाहे जितना भी खेलें फिर भी उन्हें थकान नहीं लगती, पसीना नहीं आता।

तीर्थंकर भगवान जहाँ कदम रखते हैं वहाँ कमल का फूल आकर उनके पैर का रक्षण करता है, वृक्ष झुककर छाया देता है, काँटें अपने आप ही उल्टे हो जाते हैं, ताकि भगवान को चुभे नहीं। देवी-देवता उन्हें चामर (हाथ का पंखा) से हवा डालते हैं।

केवलज्ञान होने के बाद देवी-देवता समोवसरण की रचना करते हैं, जिसमें तीन गढ़ होते हैं, हर एक गढ़ में चार दरवाज़े होते हैं।.

१. पहला गढ़ चांदी का होता है जिसमें वाहन और घोड़ों को रखने की व्यवस्था होती है।

२. दूसरा गढ़ सोने का होता है, जिसमें पशु-प्राणी होते हैं।

३. तीसरा गढ़ रत्न का होता है, साधु-साध्वियाँ, गणधर, राजा-महाराजा, देवी-देवताएँ और मनुष्य सभी बैठते हैं, मध्य में अशोक वृक्ष होता है। भगवान के पीछे भव्यमंडल और ऊपर तीन छत्र होते हैं, भगवान का मुख पूर्व दिशा में होता है, और देव बाकी की तीन दिशाओं में उनका प्रतिबिम्ब रचते हैं इससे चारों ओर से भगवान का मुख दिखाई देता है, किसी को पीठ नहीं दिखाई देती, इसे चौमुखी अवस्था कहते हैं, सिंहासन पर विराजमान होकर भगवान देशना देते हैं।

भगवान की देशना सुनने के लिए बाघ, खरगोश, सिंह, बकरी सभी प्राणी अपना हिंसक भाव, भयभाव, बैर भाव सबकुछ भूलकर पास-पास बैठते हैं। वहाँ किसी को भूख, प्यास, थकान नहीं लगती, सबकुछ शांत हो जाता है। भगवान की वाणी अद्भुत होती है, हर कोई अपनी-अपनी भाषा में उसे समझ जाता है।

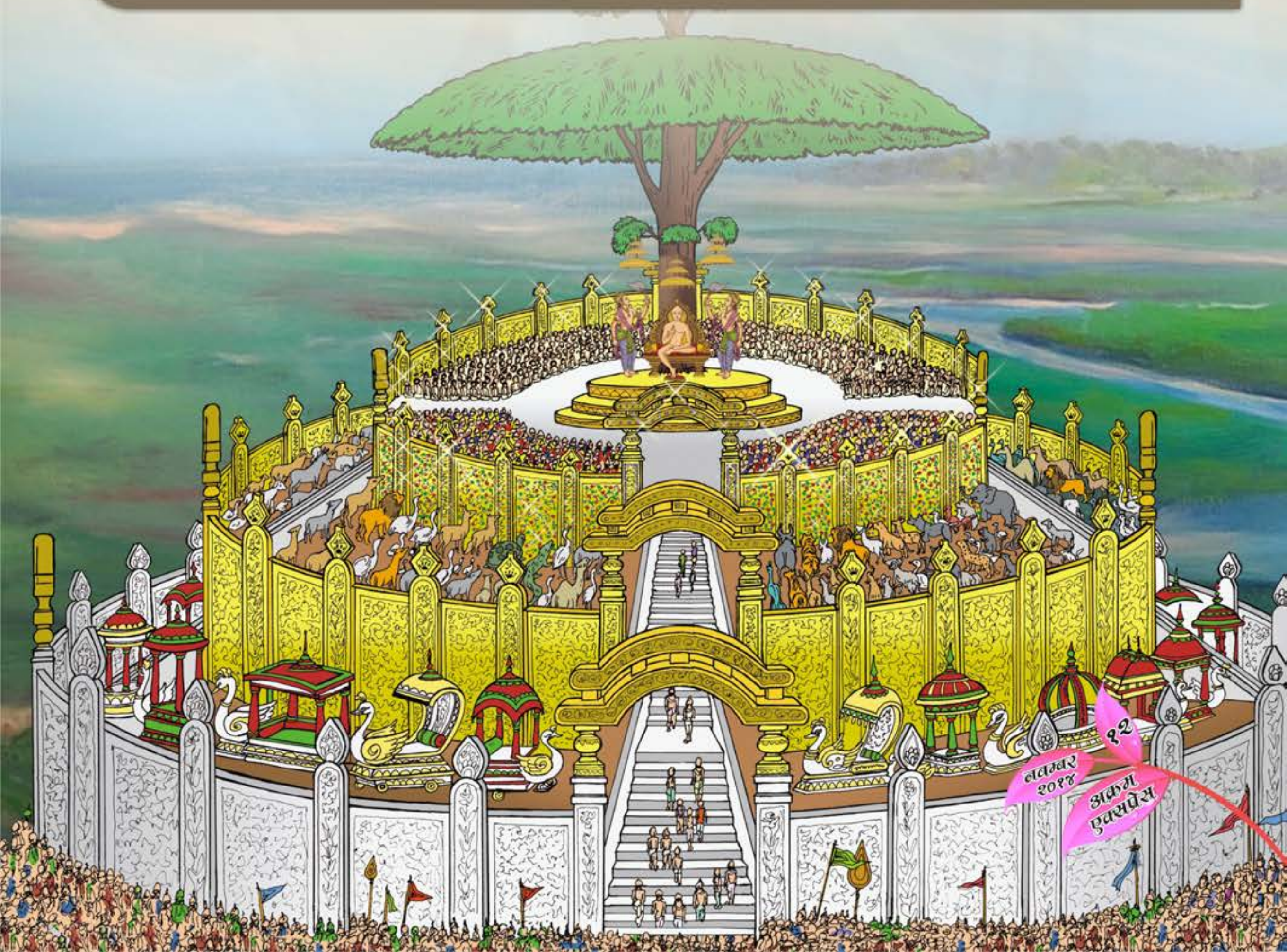

तीर्थंकर भगवान के बाल नहीं बढ़ते, दाढ़ी-मूछ नहीं बढ़ती, नाखून नहीं बढ़ते, रोंए भी नहीं बढ़ते।

- भगवान जहाँ कहीं भी विचरते हैं वहाँ सभी ऋतुओं के फल मिल जाते हैं।
- ५०० योजन तक बिमारी नहीं होती।
- जीवजंतुओं का उपद्रव नहीं होता।

पूरी दुनिया में कोई भी जीव इतना पुण्यशाली नहीं होता, जितने तीर्थंकर पुण्यशाली होते हैं, उनके सभी परमाणु हाइ क्वॉलिटि के (उच्च गुणवत्तावाले) होते हैं, इसिलिए हम लोग उनके प्रक्षाल का गिरता हुआ पानी पी जाते हैं न!

तीर्थंकर खुश या बहुत खुश कब होते हैं? जब ज्ञानियों को देखते हैं तब बहुत खुश हो जाते हैं कि ये लोग सब से अच्छे में अच्छे लोग हैं, सभी लोगों को तैयार करके उनके (तीर्थंकर) पास भेजते हैं। मेहनत ज्ञानी करते हैं। तीर्थंकरों को मेहनत नहीं करनी पड़ती। उनके पास तैयार माल पहुँचता है। लोगों की गढ़ाई ज्ञानियों को करनी पड़ती है। इसलिए वे उन पर बहुत खुश रहते हैं। - करोड़ों देवी-देवता भगवान की सेवा में हमेशा उपस्थित ही रहते हैं।

महाविदेह क्षेत्र में यांत्रिक विमान नहीं हैं, सभी मांत्रिक विमान हैं, यहाँ यांत्रिक हैं और वहाँ मांत्रिक हैं। उसमें इंधन वगैरह की ज़रूरत नहीं पड़ती। और यांत्रिक में तो इंधन कम पड़ जाए तो नीचे बैठ जाता है या तो "मशीन बंद हो गई है" ऐसा कहते हैं।

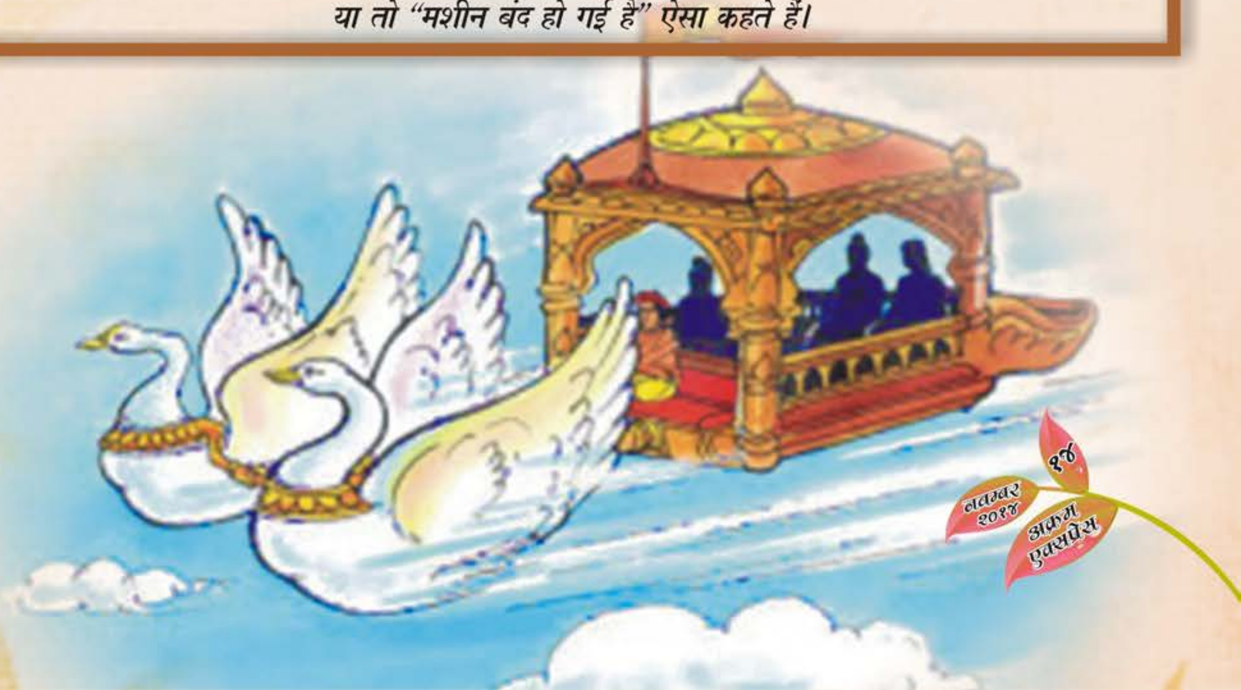

अपने आपको परखकर देखो!

नीचे दिए गए हर एक सीमंधर स्वामी के पास वे कौन से त्रिमंदिर के भगवान हैं। वह दी गई लिस्ट में से ढूँढकर लिखो।

अडालज, गोधरा, भूज, राजकोट, दादा दर्शन, भादरण, सुरेन्द्रनगर चलामणी, मोरबी

मीठी यादें

अहमदाबाद में "दादा दर्शन" बिल्डिंग बनने से पहले पूज्य नीरू माँ, पूज्य दीपकभाई, सभी आप्तपुत्र और पुत्रियाँ सभी वरुण अपार्टमेन्ट में रहते थे। जैसे-जैसे दादा का परिवार बड़ा होता गया वैसे-वैसे जगह छोटी पड़ने लगी। सभी ने अपनी खुद की जगह लेकर अपार्टमेन्ट से निकलने का सोचा।

उसके बाद पूज्य नीरू माँ, आप्तपुत्रों के साथ बहुत जगह देखने गई लेकिन कहीं भी बात नहीं बन रही थी। उन दिनों एक महात्मा ने नदी के किनारे पर स्थित एक प्लोट आप्तपुत्रों को दिखाया। जगह छोटी थी लेकिन आप्तपुत्रों को लगा कि यदि यहाँ बिल्डिंग बने और उसकी छत पर सीमंधर स्वामी की प्रतिमा बिराजमान हो तो नदी के किनारे से और ब्रिज पर से सभी लोगों को भगवान के अच्छी तरह से दर्शन होंगे।

आप्तपुत्रों ने जब नीरू माँ को इस प्रस्तावना के बारे में बताया तब नीरू माँ को उनका विचार बहुत पसंद आया। जगह छोटी होने की वजह से आप्तपुत्र दूसरी जगह ढूँढ रहे थे लेकिन पूज्य नीरू माँ के दिल में तो यही जगह बस गई थी।

उसके बाद पूज्य नीरू माँ को करीब पंद्रह बार सपने में, विशाल सीमंधर स्वामी भगवान बिल्डिंग की छत पर बैठे हैं ऐसे दर्शन हुए। तभी से उनके भीतर यह बात पक्की हो गई कि विशाल सीमंधर स्वामी भगवान बिल्डिंग की छत पर ज़रूर विराजमान होंगे। जगह मिलने में बहुत सी मुश्किलें आई लेकिन अंत में उनका सपना पूरा हुआ और उस जगह पर "दादा दर्शन" बना और सीमंधर स्वामी भगवान की अलौकिक प्राण प्रतिष्ठा हुई।

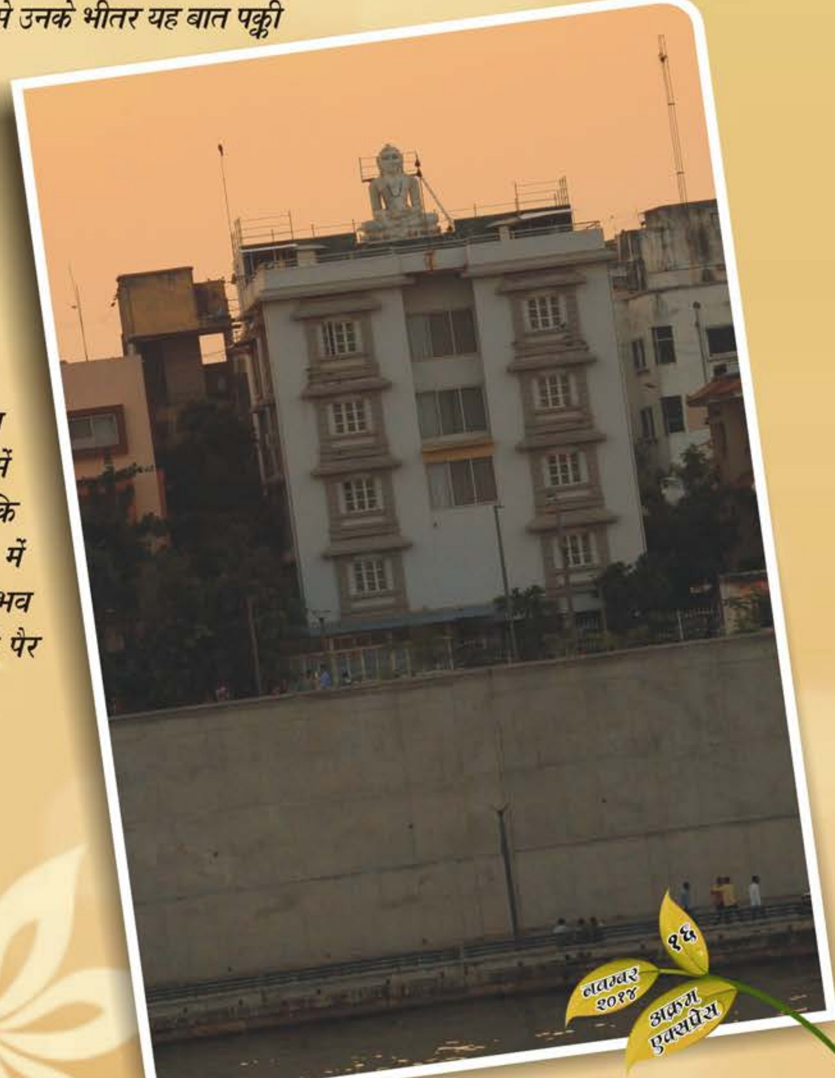

एक बार पूज्य नीरू माँ को जीवंत सीमंधर स्वामी भगवान के सपने में दर्शन हुए। भगवान इतने विराट थे कि जब नीरू माँ ने भगवान के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया, तब उन्हें अनुभव हुआ कि उनका पूरा शरीर भगवान के पैर के अँगूठे के कुछ भाग जितना ही था!

सुरेन्द्रनगर के एक महात्मा की बात है। उनके पास ज़मीन थी। उन्हें ये ज़मीन मंदिर बनवाने के लिए देने की बहुत भावना थी। उन्होंने एक आप्तपुत्र से इस बारे में बात की। आप्तपुत्र ने इस संबंध में नीरू माँ से बात की कि वे आपसे बात करना चाहते हैं। नीरू माँ ने उन्हें मिलने के लिए बुलाया।

उस समय नीरू माँ की तबियत बहुत खराब रहती थी। इसलिए दूसरे एक आप्तपुत्र ने कहा, "नीरू माँ हमारे अडालज और राजकोट, ऐसे दो मंदिर तो बन गए हैं। अभी आपकी तबियत बिल्कुल भी ठीक नहीं रहती हैं इसलिए ऐसा लगता है कि हम सभी भाई-बहनें थोड़ा समय आपके साथ रहें और आपकी सेवा करें। ये सभी काम बढ़ते रहते हैं और हमें उसमें ध्यान देना पड़ता है, इसमें आपकी तबियत का ध्यान नहीं रख पाते हैं। अभी हम नये मंदिर का विचार रहने देते हैं। नई-नई ज़मीन देनेवाले तो बहुत आएँगे लेकिन आपकी तबियत अच्छी हो जाएँ बाद में करेंगे।"

नीरू माँ ने कहा, "हाँ, ठीक है लेकिन मुझे तो सिर्फ मिलना ही है। मैं ज़मीन की कुछ बात ही नहीं करूँगी। वे कहेंगे फिर भी मैं "हाँ" नहीं कहूँगी। हम ज़रूर से पहले तबियत पर ध्यान देंगे।"

फिर वे महात्मा आए। उन्होंने मंदिर बनाने के बारे में सभी बातें की। नीरू माँ तुरंत बोलीं, "हाँ, हाँ, आप मंदिर का काम चालू करो। आप्तपुत्रों से मिल लेना, उन्हें जगह दिखाना और तय कर लेना।"

महात्मा के जाने के बाद उन आप्तपुत्र ने नीरू माँ से कहा, "नीरू माँ, आप अभी तो मना कर रहीं थीं कि हमें नहीं करना है और अचानक सब तय कर दिया! आपकी तबियत का ध्यान रखना था।"

यह सुनकर नीरू माँ एकदम खुमारी से बोलीं, " क्या इन नीरू बहन के शरीर के लिए, सीमंधर स्वामी का काम आ रहा हो तो "ना" कहा जाता हे भला? आज के बाद खबरदार कभी भगवान का काम हो रहा हो और वहाँ "ना" नहीं कहना चाहिए, अंतराय(रुकावट) नहीं डालने चाहिए, हमारी तरफ से हमेशा "हाँ" ही होनी चाहिए।

और आखिर सुरेन्द्रनगर में मंदिर बना और भगवान पधारे!

चलो खेले .....

१. नीचे दिए गए चित्रों में से १० तफावत (अंतर) ढूँढ निकालो।

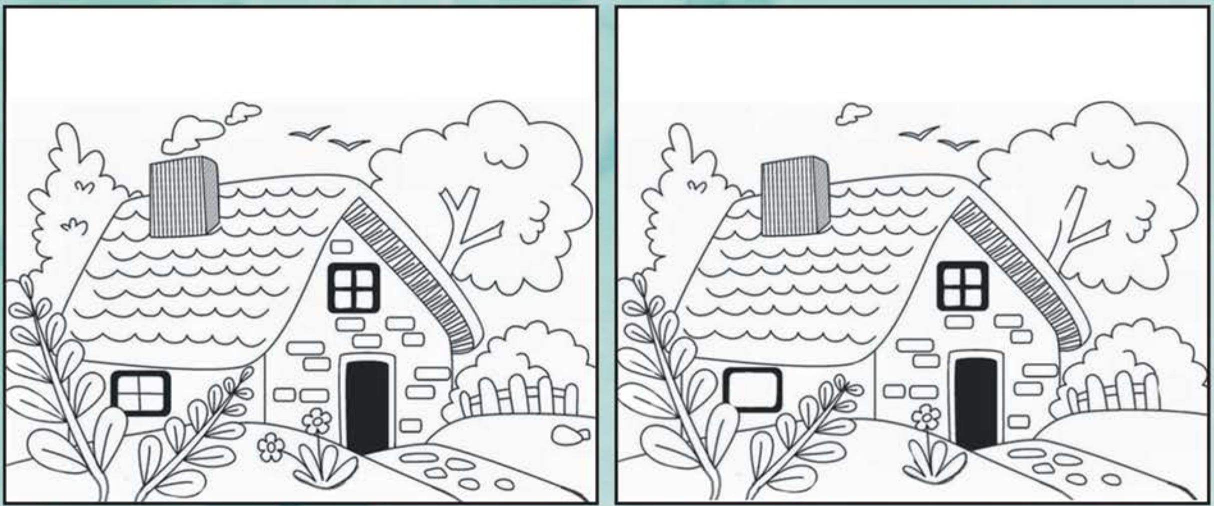

२. दी गई आड़ी और खड़ी चाबियों के अनुसार नंबर लिखो।

आड़ी चाबी

२. २ साल के कितने सप्ताह होते हैं?

४. नौ बार नौ

५. १६ वी खड़ी चाबी में से १३ वी आडी चाबी बाद करो।

७. १० वी खड़ी चाबी में से १५ वी आडी चाबी जोड़ो।

८. २१५३ को फिर से लगाओ।

१०. ९६ का तीसरा भाग

१२. १०० का आधा

१३. २६७४ को फिर से लगाओ

१५. १७ वी खड़ी चाबी में से २ री खड़ी चाबी बाद करो।

१६. २ दिन मतलब ---------घंटे

१७. ७६ का आधा करो

१८. ७२ से तीन बार गुणा करो

खड़ी चाबी

१. १०० का पाँचवा भाग

२. ३३ का तीसरा भाग

३. २०७६ का दो गुना

४. पहली खड़ी चाबी के चार बार गुणा करो

६. ८३ का चौथा भाग

७. दूसरी आड़ी चाबी का ६ बार गुणा करो

९. ५१ का पाँच बार गुणा करो

११. ३५६४ का आधा करो

१४. दो दर्जन मतलब कितने?

१५. ७ बार ४ से गुणा करो

१७. ७२ का आधा करो

१९. ९० का ५ वाँ भाग

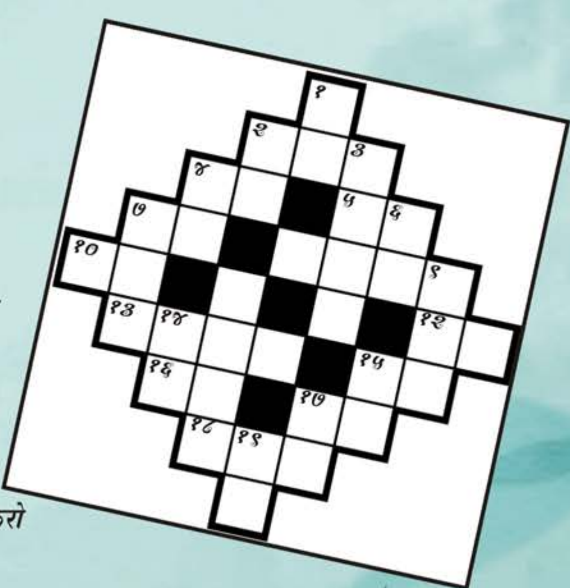

३. सामने दिए चित्रों में रास्ता ढूँढो।

४. सामने दिए चित्रों में बिन्दू को जोड़कर डिज़ाइन बनाओ

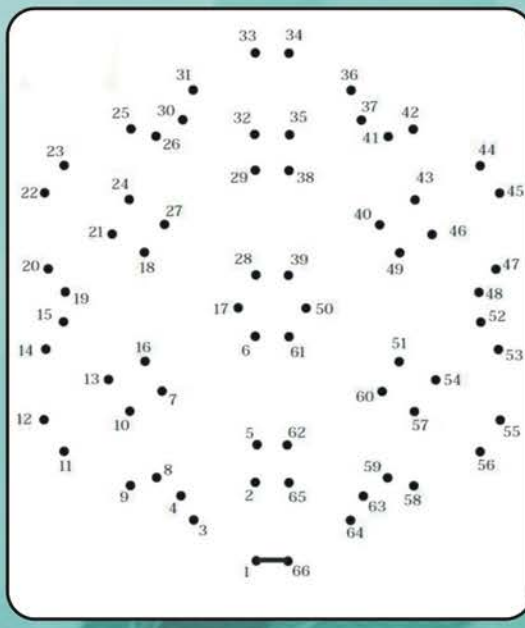

पज़ल के जवाब

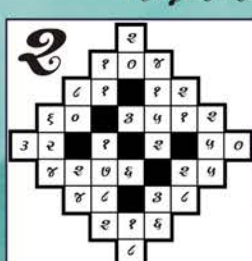

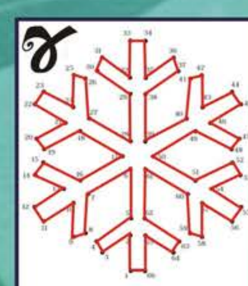

अपने आपको परखकर देखो! के जवाब १. भूज, २. दादा दर्शन, ३. अडालज, ४. मोरबी, ५. गोधरा, ६. राजकोट, ७. भाद्रण

Akram Express

November 2014
Year : 2, Issue : 8
Conti. Issue No.: 20

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

श्री सीमंधर स्वामी की आरती

जय "सीमंधर स्वामी", प्रभु तीर्थंकर वर्तमान,
महाविदेह क्षेत्रे विचरता, (२) भरत ऋणानुबंध...जय सीमंधर
"दादा भगवन" साक्षी ए, पहोचाडूँ नमस्कार (२) ....(स्वामी)
प्रत्यक्ष फल पामुं हूँ, (२) माध्यम ज्ञान अवतार...जय सीमंधर
पहेली आरती स्वामी नी, ऊँ परमेष्टि पामे (२) ...(स्वामी)
उदासीन वृत्ति वहे, (२) कारण मोक्ष सेवे....जय सीमंधर
बीजी आरती स्वामीनी, पंच परमेष्टि पामे ....(स्वामी)
परमहंस पद पामी, (२) ज्ञान-अज्ञान लणे....जय सीमंधर
त्रीजी आरती स्वामीनी, गणधर पद पामे ...(स्वामी)
निराश्रित बंधन छूटे, (२) आश्रित ज्ञानी थये...जय सीमंधर
चौथी आरती स्वामीनी, तीर्थंकर भावि ...(स्वामी)
स्वामी सत्ता दादा कने, (२) भरत कल्याण करे...जय सीमंधर
पंचमी आरती स्वामीनी, केवल मोक्ष लहे ...(स्वामी)
परम ज्योति भगवंत हूँ, (२) अयोगी सिद्ध पदे...जय सीमंधर
एक समय स्वामी खोळे जे, माथु ढाळी नमशे ...(स्वामी)
अनन्य शरणुं स्वीकारी, (२) मुक्ति पदने वरे...जय सीमंधर

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.